(1) समाजवाद

राज्य के कार्य के सम्बन्ध में आज समाजवाद सर्वाधिक मान्य तथा लोकप्रिय सिद्धान्त है। यह आधुनिक समय की सबसे अधिक महत्वपूर्ण विचारधारा है। आज का युग समाजवादी युग से संबोधित है। समाजवादी विचारधारा आज एक राजनीतिक दर्शन ही नहीं वरन् यह जीवन का एक माध्यम है जो व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में विश्वास रखता है।

मार्क्स और उसके समर्थकों ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया है उसे ही साधारणतः समाजवादी विचारधारा कहा जाता है।

समाजवाद शब्द (Socialism) Society से लिया गया है जिसका अर्थ समाज से है। इसलिए कहा जा सकता है कि समाजवाद का उद्देश्य समाज के सुधार से है।

समाजवाद का सिद्धान्त 19 वीं शताब्दी के व्यक्तिवादी सिद्धान्त के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया है। व्यक्तिवादी सिद्ध के विरुद्ध समाजवाद राज्य के कार्य क्षेत्र को अधिक से अधिक विस्तृत करना चाहता है। समाजवाद चाहता है कि उत्पादन के सभी साधन राज्य के हाथ में होनी चाहिए उत्पादन एवं वितरण राज्य के हाथ में हो। समाजवाद का यही आधारभूत धारणा है।

समाजवाद के अनुयायियों और समर्थकों की संख्या

समाजवाद के बदलते हुए विभिन्न रूपों के कारण इसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा करना बहुत कठिन है। इसलिए कहा जाता है कि समाजवाद के उतनी परिभाषाएँ है जितने समाजवाद के रूप।

उपरोक्त कठिनाईयों के कारण ही Joad ने लिखा है कि, " Socialism is like a hat that has lost its shape because everybody wears it."

मनुष्य के मस्तिष्क को यदि सबसे अधिक किसी प्रश्न ने संक्रमित किया है तो वह अनेक रूपीय जटिल तथा अस्पष्ट समाजवाद है। एक अन्य विचारक ने कहा है कि, " समाजवाद बहुरूपिया वाला जन्तु की तरह है

जिसका जितनी देर में एक सिर भी नहीं कटता कोई पता उतनी देर में एक नया सिर उसके स्थान पर निकल आता है।

इस प्रकार सारांश यह है कि समाजवाद की सर्वसम्मत परिभाषा देना कठिन है। फिर भी कुछ विद्वानों ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है —

Sellers के अनुसार, "समाजवाद एक ऐसा जनतांत्रिक आर्थिक आन्दोलन है जिसका उद्देश्य अधिकाधिक न्याय तथा स्वतन्त्रता की प्राप्ति है।"

के अनुसार — "उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार को पूंजीवाद कहते हैं और इन साधनों पर सामाजिक अधिकार को समाजवाद कहते हैं।"

Bernard Shaw के अनुसार — "समाजवाद आय की समानता के अतिरिक्त कुछ नहीं है।"

~~श्री जय प्रकाश नारायण के अनुसार — "समाजवाद आय की समानता के अतिरिक्त कुछ नहीं है।"~~

श्री जय प्रकाश नारायण के अनुसार 'समाजवाद ऐसा कार्यरत समाज होता है जिसमें सभी श्रमिक होते हैं।"

उपरोक्त परिभाषाओं से समाजवाद के मूल तत्वों का पता चलता है। ये तत्व हैं — पूंजीवाद का विनाश, प्रतियोगिता को समाप्त करना, व्यक्ति की तुलना में समाज का महत्व, उत्पादन और वितरण के साधनों पर समाज का नियन्त्रण और राज्य को अधिक से अधिक कार्य सौंपना।

पूंजीवाद का विनाश — पूंजीवाद के दोषों को देखते हुए समाजवाद पूंजीवाद का विनाश और आर्थिक क्षेत्र में अधिक से अधिक समानता का पोषक है। पूंजीवादी व्यवस्था के द्वारा समाज की एकता प्रायः नष्ट हो जाती है। अतः समाजवाद का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य पूंजीवाद को नष्ट कर देना है।

— प्रतियोगिता को समाप्त करना — समाजवाद का लक्ष्य स्थानीय, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सभी क्षेत्रों में प्रतियोगिता के स्थान पर सहयोग की स्थापना

करना है। प्रतियोगिता ने व्यक्ति के चरित्र का पतन हो जाता है। व्यक्तिगत लाभ के लिए प्रतियोगिता द्वारा उत्पादन की अनुचित मात्रा बढ़ जाती है। समाजवादी प्रतियोगिता को एक अनुचित कार्य मानते है और उनका कहना है कि प्रतियोगिता से केवल धनी वर्ग ही लाभान्वित होता है गरीब या मजदूर वर्ग नहीं।

व्यक्ति की तुलना में समाज की महत्ता — एक विद्वान ने कहा है, " समाजवाद का अभिप्राय है व्यक्ति के हितों को सामाजिक हितों के अधीन करना।" समाजवादी सामाजिक हितों के लिए व्यक्तिगत हित के लिए त्याग के लिए तत्पर रहते है।

- मानवीय परिस्थितियों की समानता — समाजवाद सबको बराबर कर देने वाला यंत्र है। समाजवाद का उद्देश्य सामाजिक परिस्थितियों में अधिक समानता उत्पन्न करना है।
- उत्पादन और वितरण के साधनों पर समाज का नियंत्रण — समाजवाद उत्पादन के साधनों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में है। ~~e~~ यह व्यक्तिगत सम्पत्ति का विरोधी है और ऐसी सम्पत्ति को वह चोरी मानता है विलियम का मत है कि " जमीन पर कर देना एक व्यक्ति डकैती से कम नहीं है।"
- समाजवाद राज्य को अधिक से अधिक कार्य सौंपना चाहता है — समाजवाद व्यक्तिवादियों की तरह राज्य को आवश्यक बुराई नहीं मानता है बल्कि वह राज्य को अधिक से अधिक कार्य सौंपना चाहता है समाजवादियों के अनुसार राज्य व्यक्तियों के विकास के लिए सर्वोत्तम साधना है और सामाजिक जीवन में प्रायः सभी कार्य राज्य को सम्पादित करने चाहिए जो समाज के लिए आवश्यक हो।

समाजवाद के पक्ष में तर्क —
विचारकों ने समाजवाद के पक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए है
- समाजवाद पूँजीवाद एवं व्यक्तिवाद के दोषों को दूर करता है यह सभी लोगों को अवसर की समानता देता

ताकि सभी लोगों को आर्थिक स्वतन्त्रता मिले एवं गरीबी से मुक्ति मिले। समाजवाद न्याय पर आधारित है। इसमें उत्पादन, भूमि, कल कारखानों, यातायात के साधनों पर समस्त समाज का नियंत्रण होता है। यह सभी प्रकार के शोषण को समाप्त करता है। समाजवाद द्वारा ही सच्चा लोकतन्त्र सम्भव है। समाजवाद लोगों को आर्थिक के साथ-साथ राजनीतिक स्वतन्त्रता भी प्रदान करता है। यह सहकारिता के सिद्धान्त पर आधारित है। यह सभी प्रकार के अनुचित प्रतियोगिता को समाप्त करता है। समाजवाद सामान्य जनता के हितों की ओर ध्यान देता है।

किन्तु समाजवाद के विरुद्ध भी लोगों ने कई तर्क दिए। यह लोगों के व्यक्तिगत उत्साह को नष्ट करता है। भूमि एवं उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण अव्यवहारिक है। उनका मानना है कि समाजवाद सम्पूर्ण समाज को दो वर्गों में बाँट देता है और समाजवाद केवल श्रमिकों की भलाई पर ही बल देता है। इससे राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुँचता है। समाजवाद प्रकृति के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। प्रकृति ने लोगों को बौद्धिक, शारीरिक एवं अन्य दृष्टियों से असमान बनाया है। जबकि समाजवाद सभी को समान कर देना चाहता है। इससे लोगों का नैतिक पतन होता है क्योंकि मनुष्य के कार्य करने के प्रोत्साहन समाप्त हो जाते हैं। साथ ही वह निष्क्रिय भी बन जाता है। समाजवादी व्यवस्था वाला राज्य खर्चीला भी है क्योंकि पूँजीवादी व्यवस्था में जिस कार्य को थोड़े से लोग पूरा कर लेते हैं वहाँ समाजवादी व्यवस्था में कर्मचारियों की फौज। यह प्रचारात्मक अधिक है और व्यवहारिक कम।

भले ही समाजवाद की कितनी भी आलोचना क्यों न की जाए परन्तु समाजवादी राज्य वर्तमान युग की माँग है। पूँजीवादी व्यवस्था सार्वजनिक कल्याण की दृष्टि से सफल नहीं हो सकती है। इसलिए तो किसी न किसी रूप में सभी विचारधाराओं के लोग समाजवाद की ओर आकृष्ट हुए। समाजवाद का यह विचार सत्य है कि आर्थिक असमानता में राजनीतिक समानता व्यर्थ है। आज विश्व के अधिकांश देशों में समाजवाद के आधार पर व्यवस्थाएँ स्थापित हैं। भारत में भी हमारे संविधान का लक्ष्य समाजवाद की स्थापना करना है और इस दृष्टि से काफी काम हुए हैं — बैंकों का राष्ट्रीयकरण, जमींदारी उन्मूलन, श्रमिकों के लिए सुविधाएँ, भूमि सुधार अधिकारी अधिनियम इत्यादि।

~~समाजवाद का उद्देश्य~~

(5)

समाजवाद का उद्देश्य प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक समाजवादी व्यवस्था का निर्माण करना है। आज सोवियत रूस और अनेक यूरोपिय देशों में समाजवाद के जो त्रुटियाँ थी जैसे स्वतन्त्रता के अधिकारों की कमी इत्यादि उन्हें दूर करके समाजवाद को और भी प्रजातान्त्रिक बनाया जा रहा है। पूँजीवादी देशों ने जो अपने में वे सारे सुधार लाये हैं जो एक समाजवादी व्यवस्था के लिए आवश्यक है। इसलिए समाजवाद को प्रजातन्त्र का पूरक कहा जा सकता है।